अखण्ड जाप

हम हो या आप,
एक बिचारधारा पर एक साथ।
चिंतन मनन और विश्वास,
हो एकात्म स्त्रोत से अनुचित का नाश।
इसके लिए करते है, अखण्ड जाप।।

एक सतत प्रयास,
अंधकार और प्रकाश।
भुख और प्यास,
उन्मादी बिचार और सत्य प्रकाश।
सबका समायोजन करता है,
ये जाप।।

चिर चिंतन स्थिर मंत्र,
शारीरिक उर्जा का नियोजित तंत्र।
स्वयं को उर्जावान वाक्य से संयोजन,
हे प्रकृति, मेरा करो नियोजन।
कालातीत आत्मा छणभंगुर जीवन,
उर्जावान कर दो मेरा हर कण-कण।।

प्रज्वलित प्रकाश, स्थिर विश्वास।

संयमित सांस,
दोहराते वाक्य है, खास।
बन्धते है, धागो के साथ,
पुर्ण होती है, प्रयास।।
पुर्णता का ऐ भान,
प्रभु तुम हर जगह हो समान।
फिर क्यों है, इतने बिधान,
मैने एक मंत्र लिया है, ठान।
मुझमे भर दो अपना पुरा ज्ञान।।
अखण्ड है, अखण्डित,
क्रियान्वित और संयमित।
विश्वास के तत्व से प्रफुल्लित,
जागृत कर दो मेरा स्मृति।।
तत्व ज्ञान है, संसार का,
मिले न कोई अपमान।
युग-युग मे यशोगान रहे,
ऐसा कर दो मुझे उर्जावान।
हे प्रकृति, तुम हो महान,
तुम्हे कोटि-कोटि प्रणाम।।
लेखक एवं प्रेषकः- अमर नाथ साहु